[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 3968 **FC-2** **Your Roll No.....**

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Paper : हिंदी कविता (रीतिकालीन काव्य)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. केशव के आचार्यत्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'रहीम नीति के कवि हैं - उदाहरण सहित विवेचन कीजिए। (12)

2. बिहारी के भाव-सौन्दर्य का अंकन कीजिए।

अथवा

बिहारी के काव्यशिल्प की विशेषताएँ बताइए। (12)

3. 'घनानंद प्रेम की पीर के कवि हैं - सोदाहरण विश्लेषित कीजिए।

अथवा

घनानंद के भाषिक वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिए। (12)

P.T.O.

4. 'भूषण वीर रस के कवि हैं - उदाहरण सहित पुष्टि कीजिए।

अथवा

गिरिधर कविराय के काव्य की विशेषताएँ लिखिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) जब जब वै सुधि कीजिए, तब तब सब सुधि जाहिं।

आंखिनु आंखि लगी रहैं, आँखें लागति नाहिं।

टूग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।

परति गांठ दुर्जन हिए, दई नई यह रीति।

अथवा

बानी जगरानी की उदारता बखानी जाय

ऐसी मति उदित उदार कौन की भई

देवता परसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तप वृद्ध

कहि कहि हारे सब कहि न काहू लई।

भावी, भूत, वर्तमान जगत बखानत हैं,

केशोदास क्यों हूँ न बखानी काहू पै गई

बरनैं पति चारि मुख, पूत बरनैं पांच मुख,

नाती बरनैं षटमुख तदपि नई नई। (8)

(ख) हीन भए जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानी समानै

नीर सनेही को लाय कलंक निरास है कायर त्यागत प्रानै

प्रीति की रीति सु क्यों समुझै जड़ मीत के पानि परै कौ प्रमानै

या मन की जु दसा घनआनंद जीव की जीवनि जान ही जानै।

अथवा

पानी बाढ़ो नाव में घर में बाढ़ो दाम
दोनों हाथ उलीचिए यही सयानो काम
यही सयानो काम राम को सुमिरन कीजै
पर स्वारथ के काज सीस आगे धरि दीजै
कह गिरिधर कविराय बड़े की याही बानी
चलिए चाल सुचाल राखिए आपनो पानी । (7)

6. दिए गए निर्देशों के अनुसार किन्हीं **दो** अवतरणों का रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए :

(क) साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धारि सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत हैं
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के नदी नद मद गैबरन के रलत है
ऐल फैल खैल भैल खलक में गैल गैल गजन की ठेल पेल सैल उलसत है
तारा सो तरनि धूरि धारा में लगत जिमि थारा पर पारा पारावार ज्यों हलत है ।

(भाषा-सौन्दर्य)

(ख) रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फांके तीन
रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय
टूटे पे फिर ना जुरै, जुरै गांठ परि जाय ।

(नीति-सौन्दर्य)

(ग) खैर खून खांसी खुसी बैर प्रीति मदपान
रहिमन दाबे ना दबैं जानत सकल जहान ।
यह रहीम निज संग लै, जनमत जगत न कोय
बैर प्रीति अभ्यास जस होत होत ही होय ।

(भाव-सौन्दर्य)

(घ) राजत अखंड तेज छाजत सुजस बड़ो गाजत गयंद दिग्गजन हिय साल को
साहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत ताप तजि दुजन करत बहु ख्याल को
साज सजि गज तुरी पैदर कतार दीन्हें भूषन भनत ऐसो दीन प्रतिपाल को
आन राव राजा एक मन में न लाऊँ अब साहू को सराहौं कै सराहौं छत्रसाल को ।

(रस - व्यंजना)

(6×2=12)